रूपक के अन्य प्रकार

1. नाटक- (पिछली कक्षा में पढ़ चुके है)।

2. प्रकरण- नाटक के समान ही प्रकरण की रचना होती है। यहां नायक ब्राह्मण, वणिक् या आमात्य होता है। श्रृंगार रस की प्रधानता होती है। इसमें नायक ब्राह्मण, वणिक् या आमात्य होता है। कथानक कवि-कल्पित होता है। नायिका दो प्रकार की होती है- कुलजा और गणिका। अन्य समस्त योजना नाटक के समान होती है।

3. भाण- भाण का इतिवृत्त कल्पित होता है। इसका नायक विट या धूर्त होता है। इसमें एक अंक होता है। इसमें श्रृंगार अथवा वीररस की प्रधानता होती है।

4. व्यायोग- इसका इतिवृत्त युद्धविषयक तथा प्रख्यात होता है। इसका नायक राजर्षि या देवता होता है। नायक मनुष्य भी हो सकता है। इसमें एक दिन की कथा होती है। इसमें स्त्री पात्रों की संख्या बहुत कम तथा पुरुष पात्रों की संख्या अधिक होती है। इसमें एक अंक होता है। इसमें कलह एवं युद्ध का वर्णन होता है तथा श्रृंगार और हास्य रस को छोड़कर सभी रस होते हैं।

5. समवकार- यह तीन अंकों वाला रूपक होता है। इसमें नायक देवता अथवा असुर होते हैं। इसका इतिवृत्त इतिहास प्रसिद्ध होता है। वीर एवं रौद्र रस प्रधान होता है।

6. डिम- इसका इतिवृत्त प्रख्यात होता है। इसमें देवता, यक्ष, राक्षस, गन्धर्व, नाग, भूत, प्रेत, पिशाच आदि सोलह नायक होते हैं। इसमें माया, इन्द्रजाल, संग्राम, सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण और युद्ध आदि का वर्णन होता है। मुख्य रूप से रौद्र रस प्रधान होता है।

7. अङ्क- इसमें एक अङ्क होता है। इसका नायक सामन्य पुरूष होता है। इसका कथानक इतिहास-प्रसिद्ध होता है परन्तु युद्ध पर आधारित होता है। यहां करूण रस होता है।

8. प्रहसन- हास्य व्यंग्य की प्रधानता होती है। इसमें विट, चेट आदि के पाखण्ड पूर्ण चरित्र का उपहासात्मक चित्रण होता है। यह कथानक कवि-कल्पित होता है जिसमें एक अंक होता है।

9. ईहामृग- यहां कथा वस्तु मिश्रित होती है । नायक दिव्य अथवा प्रसिद्ध वंश में उत्पन्न मनुष्य होता है । यहां अलभ्य नारी की प्राप्ति के लिये संघर्ष होता है । एक अंक अथवा चार अंक होते हैं । वीर या रौद्र रस प्रधान होता है ।

10. वीथी- यहां एक अंक होता है जो कि कवि-कल्पित कथा वस्तु पर आधारित होता है । एक या दो पात्र होते हैं । आकाशभाषित का अधिक प्रयोग होता है । श्रृंगार रस को मुख्य मानते हैं ।